कविता में विद्यमान अर्थपूर्ण वैचारिक सौन्दर्य का विकास एवं बोध – एक प्रयोगात्मक अध्ययन।

✦ घीसालाल लोधा

✦✦ डॉ. अनिता कोठारी

शोध प्रस्तावना :–

काव्य की शोभा बढ़ावे वाले तत्व अलंकार कहलाते हैं। अलंकार सौन्दर्य के साधन है। यहाँ पर अलंकार शब्द में साहित्य के समस्त सौन्दर्य विधायक–तत्वों का प्रतिनिधित्व निहित समझना आवश्यक है। अतः कविता की आत्मानन्द अनुभूति ही सौन्दर्य है।

जिस प्रकार नवयोवना (विवाहिता) के सोलह श्रृंगार करने पर उसकी सुन्दरता प्रत्येक प्राणी को अपनी ओर खीच लेती है। उसी प्रकार कविता की कलात्मक सौन्दर्य पराकाष्ठा भी जन मानस का विशाल हृदय जीत ही लेती है। कहा भी गया है कि कविता का सौन्दर्य साहित्य की शान है। इस तत्व को विविध रसिक मनीषियों ने अलग–अलग तरीके से वर्गीकृत किया है जो कि इस प्रकार है – (1) शब्द–सौन्दर्य (2) अर्थ–सौन्दर्य (3) विचार–सौन्दर्य (4) भाव–सौन्दर्य (5) शिल्प–सौन्दर्य (6) कल्पना–सौन्दर्य (7) रस–सौन्दर्य। **अर्थ एवं विचार–सौन्दर्य** में निम्नलिखित काव्यशास्त्रीय तत्वों की समावेशता रहती हैं :–

(1) अर्थ–सौन्दर्य – लक्षणा, व्यजंना शब्द–शक्ति, अर्थालंकार।

(2) विचार–सौन्दर्य/कल्पना–सौन्दर्य – नई कल्पनाएँ करना, रूप, आकार, भाव–सदृश विधान, नवीन उपमाएँ व सादृश्य वैचारिक चित्र उपस्थित करना। नीति–परक, मुक्तक आदि।

''बोध'' शब्द अपने आप में अतिविशेष है।

कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति सब कुछ जानता है। जानता है तो उसे मानता नहीं है। अर्थात् स्वीकार नहीं करता है। मानव का मस्तिष्क नई चीजों को सरलता से नहीं अपना पाता है। सर्वप्रथम वह उसका विरोध करता है। फिर धीरे–धीरे उसकी विशिष्ट–थातियों से अवगत होकर उसके प्रति सकारात्मक जानकारी प्राप्त होने के पश्चात् उसे सहज भाव से अपना लेता है।

✦ शोधार्थी जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) उदयपुर – राज.।

✦✦ सहायक आचार्या लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सी.टी.ई., उदयपुर –राज.।

E-mail:- gllovevanshi@gmail.com

इसका आशय यह है कि मानव को उस चीज का असली ज्ञान उसे तभी होता हैं जब वह उसे अच्छी तरह मानसिक रूप से अवबोध कर लेता है। अर्थात् किसी चीज का वास्तविक ज्ञान ही बोध स्वीकार किया गया है। साहित्य शास्त्र भी इसके ऐतिहासिक प्रमाण है। यथा –

(1) सम्राट अशोक को जीवन के अन्तिम दिनों में अहिंसा का बोध।

(2) गौतम बुद्ध को वट वृक्ष के नीचे परमतत्व का बोध।

(3) गोस्वामी तुलसीदास को पत्नी प्रेम से ईश्वरीय प्रेम का बोध।

(4) महर्षि वाल्मीकि को अपराधवृत्ति कार्य शैली से तपस्वी जीवन द्वारा परमात्मा का बोध।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो रहा है कि बोध शब्द–मूलतः साहित्यिक या काव्य शास्त्रीय–भाषा मे ह्रदय–परिवर्तन, विचार–परिवर्तन, प्रवृत्ति–परिवर्तन, व आचरण–परिवर्तन, की बात करता है। मन मस्तिष्क की विद्युत तरंगों के माध्यम से ह्दय के मर्मस्पर्शी द्वार पर दस्तक देना, ही साहित्यिक भाषा में सौन्दर्य बोध स्वीकार किया जा सकता है। अतः बोध का सम्बन्ध जितना मन और मस्तिष्क से हैं उससे कई गुणा मजबूत सम्बन्ध ह्रदय से हैं। मन और मस्तिष्क की भूमिका मात्र सूचना सम्प्रेषण है। संरक्षण व क्रियान्वयन तो ह्रदय की जिम्मेदारी है। अतः काव्य जगत में सौन्दर्य–बोध कवि की विचार धारा व कविता की मूल पराकाष्ठा तक जाना है। कविता का मुख्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यग्यार्थ निरूपण ज्ञान लेना ही सौन्दर्य बोध कहलाता है। सौन्दर्य–बोध ब्रह्मानन्द इसीलिए कहलाया क्योंकि यह आत्मज्ञान की विषय है। आत्मबोध का विषय है और तो और यह परम ज्ञान प्राप्ति का विषय है।

1. शोध कथन :–

कविता में विद्यमान अर्थपूर्ण वैचारिक सौन्दर्य का विकास एवं बोध – एक प्रयोगात्मक अध्ययन।

2. उद्देश्य : –

1. विद्यार्थियों में हिन्दी पद्य शिक्षण में अर्थ एवं विचार सौन्दर्य–बोध विकसित करने हेतु **शिक्षण रणनीति (श्रवण–सुदर्शन उपागम) का निर्माण करना।**
2. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्रों** में विकसित **अर्थ सौन्दर्य–बोध** का पता लगाना।
3. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्राओं** में विकसित **अर्थ सौन्दर्य–बोध** का पता लगाना।
4. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्रों** में विकसित **विचार सौन्दर्य–बोध** का पता लगाना।

5. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्राओं** में विकसित **विचार सौन्दर्य–बोध** का पता लगाना।

3. परिकल्पनाएँ –

1. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्रों** में विकसित **अर्थ सौन्दर्य–बोध** सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्राओं** में विकसित **अर्थ सौन्दर्य–बोध** सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्रों** में विकसित **विचार सौन्दर्य–बोध** सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्राओं** में विकसित **विचार सौन्दर्य–बोध** सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. शोध–औचित्य : –

शिक्षा जगत की भाषायी शिक्षण श्रृंखला में भी इस वर्तमान परिवेश में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना शिक्षक शिक्षार्थियों को शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में करना पड़ता हैं। यथा – अधिगम की समस्या, रसास्वादन की समस्या एवं काव्य समीक्षा की समस्या आदि। इन्ही समस्याओं में से एक समस्या इस समय हिन्दी के काव्य शास्त्र जगत के समक्ष अर्थ एवं विचार सौन्दर्य–बोध से संबधित उपस्थित है। विद्यार्थियों को कई बार कविता में विद्यमान अर्थ एवं विचार सौन्दर्य–बोध नहीं हो पाता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस समस्या को अध्ययन के लिए चुना गया।

5. शोध–अध्ययन विधि : – इस शोध–कार्य में **प्रयोगात्मक–विधि** का प्रयोग किया गया है।

6. शोध–उपकरण : – शोध–कार्य में सौन्दर्य–बोध का अध्ययन करने के लिए अनुसंधानकर्त्ता द्वारा स्वनिर्मित **शिक्षण रणनीति व उपलब्धि–परीक्षण** उपकरण का उपयोग किया गया है।

उपलब्धि–परीक्षण निर्माण क्षेत्र : – 1. अर्थ सौन्दर्य–तत्त्व। 2. विचार सौन्दर्य–तत्त्व।

7. शोध–न्यादर्श : – इस प्रायोगिक–कार्य को करने के लिए न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। जिसमें राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय झालावाड़ के कक्षा – 12 के 30 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

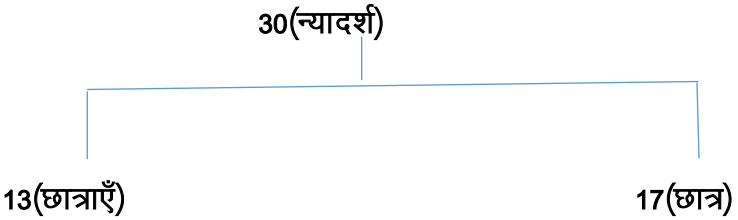

8. **शोध–सांख्यिकी :** – इस अध्ययन में मध्यमान एवं प्रतिशत मध्यमान सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

9. **समस्या का सीमांकन :** – इस प्रायोगिक–कार्य के समय, साधनों की उपलब्धता एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए समस्या का परिसीमन करना आवश्यक है। इस अध्ययन में राजस्थान के झालावाड़ जिले के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय छात्र–छात्राओं को ही शामिल किया गया है।

10. **प्रदत्त–विश्लेषण :** –

उद्देश्य : –

1. **विद्यार्थियों में हिन्दी पद्य शिक्षण में अर्थ एवं विचार सौन्दर्य–बोध विकसित करने हेतु शिक्षण रणनीति (श्रवण–सुदर्शन उपागम) का निर्माण करना।**
   इस उद्देश्य के अनुसार छात्र–छात्राओं को अर्थ एवं विचार सौन्दर्य का बोध कराने के प्रयास में शिक्षण–रणनीति का निर्माण किया गया।
2. **हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध का पता लगाना।**

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध का अध्ययन –

सारणी – 1

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध का अध्ययन : –

छात्र	अर्थ–सौन्दर्य	
	पूर्व	पश्च
मध्यमान	17.1	25.5
प्रतिशत मध्यमान	56.9	85.1
प्रमाप विचलन	1.9	2.7
मध्यमान प्रमाप विचलन	0.46	0.65
प्रमाप विचलन की त्रुटि	0.41	
सहसम्बन्ध	0.78	
टी–मूल्य	20.61	

★ 0.01 स्तर पर 99 प्रतिशत के साथ अन्तर सार्थक ★

व्याख्या एवं विश्लेषण : –

उपर्यक्त सारणी 1 में 17 छात्रों के समूह पर अर्थ सौन्दर्य पर उपचार पूर्व एवं पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य अन्तर की सार्थकता को टी–परीक्षण द्वारा जाँचा गया है।

टी–परीक्षण में प्राप्त परिफलित टी–मान 20.61 प्राप्त हुआ है। $df = 33$ है अतः टी के $df = 35$ पर टी के 0.01 स्तर पर टेबल मान 2.72 से बहुत उच्च होने के कारण शून्य–परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि छात्रों में उपचार के कारण अर्थ–सौन्दर्य पर उपचार पूर्व व उपचार पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों में 99 प्रतिशत के साथ सार्थक अन्तर है।

उद्देश्य : –

3. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध का पता लगाना।

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्राओं** में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध का अध्ययन –

सारणी – 2

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध का अध्ययन : –

छात्रा	अर्थ–सौन्दर्य	
	पूर्व	पश्च
मध्यमान	17.5	26.5
प्रतिशत मध्यमान	58.5	88.2
प्रमाप विचलन	1.9	2.2
मध्यमान प्रमाप विचलन	0.51	0.61
प्रमाप विचलन की त्रुटि	0.43	
सहसम्बन्ध	0.72	
टी–मूल्य	20.72	

★ 0.01 स्तर पर 99 प्रतिशत के साथ अन्तर सार्थक ★

व्याख्या एवं विश्लेषण : –

उपर्यक्त सारणी 2 में 13 छात्राओं के समूह पर अर्थ सौन्दर्य पर उपचार पूर्व एवं पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य अन्तर की सार्थकता को टी–परीक्षण द्वारा जाँचा गया है।

टी–परीक्षण में प्राप्त परिफलित टी–मान 20.72 प्राप्त हुआ है जो टी के $df = 25$ पर टी के 0.01 स्तर पर टेबल मान 2.79 से बहुत उच्च होने के कारण शून्य–परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि छात्राओं में उपचार के कारण अर्थ–सौन्दर्य पर उपचार पूर्व व उपचार पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों में 99 प्रतिशत के साथ सार्थक अन्तर है।

उद्देश्य : –

4. **हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध का पता लगाना।**

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्रों** में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध का अध्ययन –

सारणी – 3

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध का अध्ययन : –

छात्र	विचार–सौन्दर्य	
	पूर्व	पश्च
मध्यमान	14.7	23.8
प्रतिशत मध्यमान	49.0	79.2
प्रमाप विचलन	2.1	1.6
मध्यमान प्रमाप विचलन	0.51	0.38
प्रमाप विचलन की त्रुटि	0.41	
सहसम्बन्ध	0.62	
टी–मूल्य	22.29	

★ 0.01 स्तर पर 99 प्रतिशत के साथ अन्तर सार्थक ★

व्याख्या एवं विश्लेषण : –

उपर्यक्त सारणी 3 में 17 छात्रों के समूह पर विचार सौन्दर्य पर उपचार पूर्व एवं पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य अन्तर की सार्थकता को टी–परीक्षण द्वारा जाँचा गया है।

टी–परीक्षण में प्राप्त परिफलित टी–मान 22.29 प्राप्त हुआ है। $df = 33$ है अतः टी के $df = 35$ पर टी के 0.01 स्तर पर टेबल मान 2.72 से बहुत उच्च होने के कारण शून्य–परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि छात्रों में उपचार के कारण **विचार–सौन्दर्य** पर उपचार पूर्व व उपचार पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों में 99 प्रतिशत के साथ सार्थक अन्तर है।

उद्देश्य : –

5. **हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध का पता लगाना।**

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से **छात्राओं** में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध का अध्ययन –

सारणी – 4

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध का अध्ययन : –

छात्रा	विचार–सौंन्दर्य	
	पूर्व	पश्च
मध्यमान	16.0	24.5
प्रतिशत मध्यमान	53.3	81.5
प्रमाप विचलन	1.6	2.5
मध्यमान प्रमाप विचलन	0.45	0.69
प्रमाप विचलन की त्रुटि	0.65	
सहसम्बन्ध	0.41	
टी मूल्य	13.09	

★ 0.01 स्तर पर 99 प्रतिशत के साथ अन्तर सार्थक ★

व्याख्या एवं विश्लेषण : –

उपर्यक्त सारणी 4 में 13 छात्राओं के समूह पर विचार सौन्दर्य पर उपचार पूर्व एवं पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य अन्तर की सार्थकता को टी–परीक्षण द्वारा जाँचा गया है।

टी–परीक्षण में प्राप्त परिफलित टी–मान 13.09 प्राप्त हुआ है जो टी के $df = 25$ पर टी के 0.01 स्तर पर टेबल मान 2.79 से बहुत उच्च होने के कारण शून्य–परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि छात्राओं में उपचार के कारण **विचार–सौन्दर्य** पर उपचार पूर्व व उपचार पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों में 99 प्रतिशत के साथ सार्थक अन्तर है।

6. अनुसंधानपरक निष्कर्ष : –

1. परिकल्पना – **"हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"** अस्वीकृत की जाती है क्योंकि छात्रों के अर्थ सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में सार्थक अन्तर देखा गया है।
2. परिकल्पना – **"हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित अर्थ सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"** अस्वीकृत की जाती है क्योंकि छात्राओं के अर्थ सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में सार्थक अन्तर देखा गया है।
3. परिकल्पना – **"हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"** अस्वीकृत की जाती है क्योंकि छात्रों के विचार सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में सार्थक अन्तर देखा गया है।
4. परिकल्पना – **"हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित विचार सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"** अस्वीकृत की जाती है क्योंकि छात्राओं के विचार सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में सार्थक अन्तर देखा गया है।

7. अनुसंधानपरक सुझाव –

1. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण **शब्द सौन्दर्य–बोध** के लिए भी किया जा सकता है।
2. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण **ध्वनि सौन्दर्य–बोध** के लिए भी किया जा सकता है।
3. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण **भावात्मक सौन्दर्य–बोध** के लिए भी किया जा सकता है।
4. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की गद्य–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
5. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की कहानी–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
6. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की कथा–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
7. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की नाटक–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
8. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण अन्य भाषाओ की अन्य – विधाओ के लिए भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची : –

1. चौधरी, रामखेलावन : हिन्दी–शिक्षण–कला, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनउ।
2. तिवारी, उदयनारायण : हिन्दी भाषा का उद्‌गम एवं विकास, भारती भण्डार, लीडर प्रेस इलाहाबाद।
3. रमण बिहारी लाल : हिन्दी–शिक्षण, रस्तोगी एण्ड सन्स, मेरठ।
4. वर्मा, धीरेन्द्र : हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
5. वर्मा, ब्रजकिशोर : भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।